

रविवार 11 अक्टूबर, 2026

विषय — क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 12: 10

"फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103: 1-4, 6, 19-22

- ¹ हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- ² हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- ³ वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
- ⁴ वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,
- ⁶ यहोवा सब पिसे हुआओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।
- ¹⁹ यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।
- ²⁰ हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो!
- ²¹ हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके टहलुओं, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!
- ²² हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 103: 13

- ¹³ जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।

2. यशायाह 38: 1-5, 9, 12 (से 1st :), 20 (से:)

- ¹ उन दिनों में हिजकियाह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जा कर कहा, यहोवा यों कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा।
- ² तब हिजकियाह ने भीत की ओर मुंह फेर कर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा;

- ³ हे यहोवा, मैं बिनती करता हूँ, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूँ और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूँ। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा।
- ⁴ तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा,
- ⁵ जा कर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा।
- ⁹ यहूदा के राजा हिजकिय्याह का लेख जो उसने लिखा जब वह रोगी हो कर चंगा हो गया था, वह यह है:
- ¹² मेरा घर चरवाहे के तम्बू की नाई उठा लिया गया है; मैं ने जोलाहे की नाई अपने जीवन को लपेट दिया है; वह मुझे तांत से काट लेगा; एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालेगा।
- ²⁰ यहोवा मेरा उद्धार करेगा।

3. यशायाह 53: 1

- ¹ जोसमाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?

4. लूका 4: 14 (से :)

- ¹⁴ फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा।

5. लूका 17: 12-19

- ¹² और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले।
- ¹³ और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर।
- ¹⁴ उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपने तई याजकों को दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए।
- ¹⁵ तब उन में से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूँ, ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा।
- ¹⁶ और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था।
- ¹⁷ इस पर यीशु ने कहा, क्या दसों शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहां हैं?
- ¹⁸ क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता?
- ¹⁹ तब उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है॥

6. लूका 5: 17, 18 (से :), 19-26 (से 2nd ,)

- ¹⁷ और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गांव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ उसके साथ थी।
- ¹⁸ और देखो कई लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट पर लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के साम्हने रखने का उपाय ढूंढ़ रहे थे।
- ¹⁹ और जब भीड़ के कारण उसे भीतर न ले जा सके तो उन्होंने कोठे पर चढ़ कर और खप्राँल हटाकर, उसे खाट समेत बीच में यीशु के साम्हने उतरा दिया।
- ²⁰ उस ने उन का विश्वास देखकर उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।

- ²¹ तब शास्त्री और फरीसी विवाद करने लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर का छोड़ कौन पापों की क्षमा कर सकता है?
- ²² यीशु ने उन के मन की बातें जानकर, उन से कहा कि तुम अपने मनों में क्या विवाद कर रहे हो?
- ²³ सहज क्या है? क्या यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ, और चल फिर?
- ²⁴ मैं तुझ से कहता हूं, उठ और अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा।
- ²⁵ वह तुरन्त उन के साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया।
- ²⁶ तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने अनोखी बातें देखी हैं॥

7. लूका 4: 1 (घोस्ट को)

- ¹ फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ, यरदन से लैटा...

8. लूका 7: 11 (में चला गया)-15

- ¹¹ ... नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
- ¹² जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे।
- ¹³ उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो।
- ¹⁴ तब उस ने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठाने वाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
- ¹⁵ तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां को सौंप दिया।

9. यूहन्ना 14: 12, 28 (अगर आप), 29, 31

- ¹² मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
- ²⁸ यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।
- ²⁹ और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो।
- ³¹ परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं: उठो, यहां से चलें॥

10. 1 कुरिन्थियों 1: 1 (से 2nd ,)

- ¹ पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया॥

11. 1 कुरिन्थियों 15: 51-54

- ⁵¹ देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
- ⁵² और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।
- ⁵³ क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
- ⁵⁴ और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

12. प्रकाशित वाक्य 11: 15 (राज्य)

- ¹⁵ और जब सातवें दूत ने तुरही फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 593: 20 (मोक्ष)-22

मुक्ति। जीवन, सत्य और प्रेम को सबसे ऊपर समझा और साबित किया गया; पाप, बीमारी और मृत्यु का नाश हुआ।

2. 142: 4-10

पुराने समय में मसीह या सत्य के अनुयायी ईसाई धर्म को बीमारी, पाप और मौत पर उसकी शक्ति से मापते थे; लेकिन आज के धर्म आम तौर पर इन शक्तियों में से सिर्फ एक — पाप पर शक्ति — को ही मानते हैं। हमें ईसाई धर्म के पहले सबूत के तौर पर उस अखंड वस्त्र, यानी पूरे मसीह को खोजना चाहिए, क्योंकि सिर्फ मसीह — यानी सत्य — ही हमें पक्का सबूत दे सकते हैं।

3. 271: 7-10

यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे भौतिक चीज़ों के बजाय मन के ज़रिए बीमारों को कैसे ठीक करें। वे जानते थे कि ईसाई धर्म का दर्शन, विज्ञान और प्रमाण 'सत्य' में निहित है, जो हर तरह के असंतुलन को दूर करता है।

4. 328: 30-4

उनके महान जीवन-कार्य का उद्देश्य समय की सीमाओं से परे है और इसमें पूरी मानवता शामिल है। इसका सिद्धांत अनंत है, जो किसी एक काल या सीमित अनुयायियों के दायरे से कहीं आगे तक फैला है। जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, शुद्ध ईसाई धर्म के कल्याणकारी तत्वों को उचित महत्व दिया जाएगा; उन्हें खोजा और सिखाया जाएगा, और वे सार्वभौमिक अच्छाई की पूरी भव्यता के साथ चमकेंगे।

5. 6: 23-24, 26-27

यीशु ने पाप को बाहर निकालने से पहले उसे उजागर किया और उसकी निंदा की। ... वे लोगों को यह सिखाने और दिखाने आए कि पाप, बीमारी और मौत को कैसे खत्म किया जाए।

6. 473: 26-31

यीशु ने जो कहा, उसे करके दिखाया; इस तरह उनके कामों को उनके शब्दों से ज़्यादा अहमियत मिली। उन्होंने जो सिखाया, उसे साबित भी किया। यही ईसाई धर्म का विज्ञान है। यीशु ने उस सिद्धांत को दैवीय साबित किया, जो बीमारों को ठीक करता है और गलतियों को दूर करता है।

7. 373: 1-5

अगर हम सभी नैतिक मामलों में ईसाई हैं, लेकिन ईसाई धर्म में शामिल शारीरिक छूट के बारे में अंधेरे में हैं, तो हमें इस विषय पर ईश्वर में अधिक विश्वास रखना चाहिए और उनके वादों के प्रति अधिक जागरूक होना चाहिए।

8. 94: 20-23

यीशु ने जिन दस कोढ़ियों को ठीक किया था, उनमें से केवल एक ही परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए लौटा — यानी, उस दैवीय सिद्धांत को मानने के लिए जिसने उसे ठीक किया था।

9. 134: 28-32

भौतिक बाधाओं पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का ईश्वरीय आधार है।

चमत्कार ईश्वर के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस नियम का उल्लंघन नहीं करता।

10. 168: 10-23

जब कोई बीमार होता है (मान्यता के अनुसार), तो वह दवाइयों के पीछे भागता है, सेहत के तथाकथित भौतिक नियमों को खोजता है और ठीक होने के लिए उन पर निर्भर रहता है, जबकि असल में इसी गलत सोच की वजह से वह खुद बीमारी के दलदल में फँस चुका होता है।

क्योंकि इंसानों द्वारा बनाए गए सिस्टम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि इंसान का बीमार पड़ना, बेकार हो जाना, दुख सहना और मरना—ये सब ईश्वर के नियमों के अनुसार ही होता है, तो क्या हमें इस बात पर यकीन करना चाहिए? क्या हमें ऐसी किसी सत्ता पर यकीन करना चाहिए जो पूर्णता के बारे में ईश्वर के आध्यात्मिक आदेश को नकारती हो—एक ऐसी सत्ता जिसे ईसा मसीह ने गलत साबित किया था? उन्होंने पिता की इच्छा पूरी की। उन्होंने तथाकथित भौतिक नियमों की परवाह किए बिना, बल्कि ईश्वर के नियम—यानी मन के नियम—के अनुसार बीमारियों को ठीक किया।

11. 357: 4-6

ईश्वर की दृष्टि इतनी पवित्र है कि वह बुराई को देख भी नहीं सकते। हम सच को झूठ को स्वीकार करके नहीं, बल्कि उसे नकार कर बनाए रखते हैं।

12. 369: 5-22

जिस अनुपात में मनुष्य को सभी वस्तुएं मनुष्य के रूप में खो देती हैं, उसी अनुपात में मनुष्य इसका स्वामी बन जाता है। वह तथ्यों की एक दिव्य भावना में प्रवेश करता है, और यीशु के धर्मशास्त्र को समझने के रूप में बीमारों को ठीक करने, मृतकों को ऊपर उठाने और लहर पर चलने के रूप में प्रदर्शित करता है। इन सभी कर्मों से यीशु का विश्वास इस बात पर है कि सामग्री भौतिक है, यह विश्वास है कि यह जीवन का मध्यस्थ या अस्तित्व के किसी भी रूप का निर्माणकर्ता हो सकता है।

हमने यह कभी नहीं पढ़ा कि लूका या पॉल ने रोग को ठीक करने के लिए किसी उपाय की खोज करने के लिए उसे वास्तविकता बनाया। यीशु ने कभी नहीं पूछा कि क्या बीमारी तीव्र या पुरानी है, और उसने कभी भी स्वास्थ्य के नियमों पर ध्यान देने की सिफारिश नहीं की, कभी दवा नहीं दी, कभी यह जानने के लिए प्रार्थना नहीं की कि क्या ईश्वर की इच्छा है कि मनुष्य जीवित रहे। उसने मनुष्य को, जिसका जीवन ईश्वर है, अमर होना समझा, और जाना कि मनुष्य के दो जीवन नहीं हैं, एक को नष्ट करने के लिए और दूसरे को अविनाशी बनाने के लिए।

13. 243: 25 (सच)-6

सत्य में त्रुटि की कोई चेतना नहीं है। प्रेम में घृणा का भाव नहीं होता। जीवन का मृत्यु से कोई संबंध नहीं है। सत्य, जीवन और प्रेम अपने से भिन्न हर चीज के विनाश का नियम हैं, क्योंकि वे ईश्वर के अलावा कुछ भी घोषित नहीं करते हैं।

बीमारी, पाप और मृत्यु जीवन का फल नहीं हैं। वे ऐसे लोग हैं जो सत्य को नष्ट कर देते हैं। पूर्णता अपूर्णता को चेतन नहीं करती है। भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

14. 244: 10 (पॉल)-12

पॉल लिखते हैं: "मसीह यीशु में जीवन देने वाली आत्मा के नियम ने मुझे पाप और मृत्यु के नियम से आज़ाद कर दिया है।"

15. 494: 30-3

हमारे गुरु ने बुरी आत्माओं (बुराइयों) को दूर किया और बीमारों को ठीक किया। उनके अनुयायियों के बारे में भी यही कहा जाना चाहिए कि वे खुद से और दूसरों से डर और हर तरह की बुराई को दूर करते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। जब भी कोई इंसान ईश्वर के मार्गदर्शन में चलता है, तो ईश्वर उसके ज़रिए बीमारों को ठीक करते हैं। सच्चाई आज भी उतनी ही पक्के तौर पर गलतफहमी को दूर करती है, जितनी उन्नीस सदियों पहले करती थी।

16. 228: 25 (वहाँ)-27

ईश्वर के अलावा कोई शक्ति नहीं है। सर्वशक्तिमान के पास ही सारी शक्ति है, और किसी दूसरी शक्ति को मानना ईश्वर का अनादर करना है।

17. 174: 17-21

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

सिनाई पर्वत की गड़गड़ाहट और पहाड़ पर दिया गया उपदेश युगों-युगों तक अपना प्रभाव डालते रहेंगे; वे रास्ते में आने वाली हर गलत बात को सुधारेंगे और धरती पर स्वर्ग के राज्य का संदेश देंगे। सच सामने आ चुका है, बस उसे अमल में लाने की ज़रूरत है।

18. 565: 15 ("का)-18

..."उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा," क्योंकि मसीह — जो परमेश्वर का विचार है — अंततः सभी राष्ट्रों और लोगों पर दैवीय विज्ञान के साथ शासन करेगा — अनिवार्य रूप से, पूरी तरह से और अंतिम रूप से।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6